चांद से चमकीले धूमकेतु का आगमन

बहुत हल्ला था कि 21 दिसंबर के दिन दुनिया खत्म हो जाएगी। ज़ाहिर है वैसा तो कुछ हुआ नहीं। मगर जो घटना पक्की तौर पर होने वाली है वह है एक धूमकेतु का आगमन। यह एक नया धूमकेतु है जो शायद पहली बार सौर मंडल के अंदरुनी भाग में आ रहा है। इसका नाम है आइसॉन। यह नवंबर 2013 में अपनी छटा बिखेरेगा और अनुमान है कि आकाश में यह चांद से भी ज़्यादा चमकीला नज़र आएगा।

वैसे इस सम्बंध में एक बात का ध्यान रखना ज़रूरी है। जैसे ही कोई धूमकेतु नज़र आता है, खगोल शास्त्री जल्दी ही यह तो काफी सटीकता से बता पाते हैं कि उसका रास्ता क्या होगा, वह पृथ्वी के कितने करीब आएगा, वगैरह। मगर यह पता करना आसान नहीं होता कि वह कितना चमकेगा।

जैसे 1970 के दशक में कोहूटेक धूमकेतु आया था और कहा गया था कि यह खूब चमकेगा मगर अंततः यह बहुत ही धुंधला निकला था। धूमकेतु दरअसल बर्फीले पिंड होते हैं जो सौर मंडल में नेप्चून के बाहर स्थित होते हैं। इनका परिक्रमा पथ कभी-कभी इन्हें सूर्य के पास लाता है। जब ये बर्फीले पिंड सूर्य के नज़दीक आते हैं तो सूर्य की गर्मी से बर्फ पिघलकर पानी बनता है और पानी उबलने लगता है, भाप बन जाता है। इसी भाप और धूल की एक पूंछ-सी बन जाती है जो चमकती है। लिहाज़ा किसी धूमकेतु की चमक इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें कितना माल है। यह पता करना मुश्किल होता है कि दूर से आते किसी बर्फीले पिंड में कितना द्रव्यमान है। और जब कोई पिंड पहली बार हमारे निकट आए तो यह कहना और भी मुश्किल होता है।

आइसॉन को सबसे पहले बेलारूस के आर्त्योम नोविचोनोक और रूस के विताली नेव्स्की ने देखा था। उस समय यह सूर्य से करीब 96.5 करोड़ किलोमीटर दूर था। इतनी दूरी से देख लिए जाने के कारण ही माना जा रहा है कि यह काफी बड़ा है। दोनों खोजकर्ता शौकिया खगोल शास्त्री हैं और इंटरनेशनल साइन्टिफिक ऑप्टिकल नेटवर्क के सदस्य हैं और कॉमेट का नाम इसी के प्रथम अक्षरों (ISON) को लेकर रखा गया है।

आइसॉन नवंबर 2013 में सूर्य से मात्र 16 लाख किलोमीटर दूर होगा और उस समय आकाश में उसके जैसा कोई न होगा। यह नवंबर से लेकर जनवरी तक आकाश में नज़र आता रहेगा। ***(स्रोत फीचर्स)***